गुजरात से हिंदी की सम्पूर्ण साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका
ISSN - 2347 - 8764

विश्व गाथा

वर्ष : 13 अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2026 अंक नंबर : 4
संपादक : पंकज त्रिवेदी



13 वर्ष

कथा-कहानी विशेषांक

मुखपृष्ठ चित्र - जगदीश वैष्णानी

जीवन को अर्थ देने वाले चार दीपक

एक कमरे में चार दिये जल रहे थे। वहाँ एक छोटा बच्चा भी था।

एक दीपक बोला, "मेरा नाम शान्ति है। यहाँ बहुत शोर है इसलिए मैं जा रहा हूँ।" इतना कहकर वह बुझ गया।

दूसरा दीपक बोला, "मेरा नाम विश्वास है। दुनिया में झूठ का ही बोलबाला है। सम्बन्ध भी नकली है। इसलिए मैं जा रहा हूँ।" इतना कहकर वह बुझ गया।

तीसरा दीपक कहने लगा, "दुनिया मतलबी है। किसीको मेरी जरुरत नहीं। इस कारण मैं जा रहा हूँ।" यह बताकर वह भी शान्त हो गया।

तीन दियों के बुझ जाने से बालक रोने लगा। तब चौथे ने कहा, "भले ही शान्ति, विश्वास, प्रेम सभी चले जाएं पर मैं नहीं जाउंगा। मेरी ज्योत जलती रहेगी। मेरा उजाला देखकर ये तीनों एक दिन जरूर वापस आएंगे।"

बालक ने पूछा, "पर तेरा नाम क्या है?"

दीपक ने कहा- "मेरा नाम आशा है।"

थोड़े ही समय में बाकी के तीन दीपक वापस लौटे।

इस रूपक के तीन सन्देश है।

पहले तो यह तय कर लो कि जीवन सुविधापूर्ण चाहिए या अर्थपूर्ण?

पहला, **अच्छे और अर्थपूर्ण जीवन के चार पहलू हैं।**

प्रेम, विश्वास, शान्ति और आशा। सुख, सामग्री, सम्पत्ति और सलामती जीवन को सुविधापूर्ण बना सकते हैं, अर्थपूर्ण नहीं। **प्रेम, विश्वास,** शान्ति और आशा के बिना सुख, सामग्री, सम्पत्ति एवं सलामती का कोई मतलब नहीं है।

यह चार भावनाएं जीवन को अर्थवत्ता देती है।

दूसरा, आशा है तो विश्वास है, विश्वास है तो प्रेम है, प्रेम है तो शान्ति है। चारों दीपक एक-दूसरे के सापेक्ष है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण आशा है। जीवन में कितना भी अन्धेरा क्यूँ न छा जाए। आशा मत छोडना। विश्वास टूट जाएं, प्रेम छूट जाएं या शान्ति लूट जाएं तो भी आशा की ज्योत जीवन्त रखना। आशा होगी तो बाकी सब वापस आ जाएंगे।

तीसरा, **आशा की ज्योत को जीवन्त रखने के लिए श्रद्धा का तेल जरूरी है।** अपने आप पर श्रद्धा या परमतत्त्व पर श्रद्धा।

जब तक श्रद्धा है तब तक आशा जीवित है। आशा है तो सब कुछ है।

परिस्थिति का अन्धकार कितना भी घना क्यूं न हो, आशा की ज्योत जलती है तो वह कुछ नहीं कर सकता। कवि दुष्यन्तकुमार ठीक कहते हैं –

अकेला अन्धेरे से लड़ता रहा,

नन्हा सा दिया रातभर जलता रहा।

(सुखी जीवन के 100 सूत्र में से)



किंमत 150-00

उपलब्ध है : ज्ञाननी बारी - अमदावाद,

संपर्क : 9408371206

प्रकाशक : श्रुतरत्न संशोधन संस्थान-पुणे.

अक्तूबर-नवंबर-दिसंबर 2026
वर्ष – 13 * अंक – 4
संपादक
पंकज त्रिवेदी
*
मुखपृष्ठ
जगदीश वैष्णानी
*
मुखपृष्ठ-3
मिशाल हरमाणी
*
सदस्यता
वार्षिक 600/- दो वर्ष 1200/-
5-वर्ष: 3000/- आजीवन 15000/-रुपये
*
आजीवन सदस्यता
15,000/- रुपये
(डाक खर्च सहित)
*
सिर्फ सदस्यता प्राप्त करने हेतु नंबर
Paytm - Google Pay
09662514007
*
विश्वगाथा C/o. पंकज त्रिवेदी
गोकुलपार्क सोसायटी,
80 फीट रोड, सुरेन्द्रनगर 363002
(गुजरात-भारत))
*
vishwagatha@gmail.Com
*
Mo: **Calling** & **What's app**
08849012201
*
सहायक : श्रेणिक शाह
मार्गदर्शक : बिन्दु भट्ट / भावना भट्ट
*

अनुक्रमणिका

संपादकीय : पंकज त्रिवेदी - 05
*
कथा-कहानी : विशेषांक
*
भीतर धधकता ज्वालामुखी
- डॉ. माधवी एस भंडारी (कन्नड़- लेखिका व अनुवादक) - 06
झलक - मोहन कल्पना (सिंधी)
(अनु. देवी नागरानी) - 09
इक्कीसवाँ टिफ़िन - राम मोरी (गुजराती)
(अनु. मल्लिका मुखर्जी) - 11
पराठा गली - पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)
(अनु. रजनीकांत एस शाह) - 15
ऋण - गिरिमा घारेखान (गुजराती)
(अनु. रजनीकांत एस शाह) - 19
पेंडुलम – मधुर कुलश्रेष्ठ - 21
भविष्य का भय - बुलाकी शर्मा
(राजस्थानी- लेखक व अनु.) - 24
मधुमक्खी - सुशांत सुप्रिय - 26
लोडर: एक ट्रेन कथा
- डॉ किसलय पंचोली - 28
भूख - विजया गुप्ता 'सुवर्ण किंशुक' - 32
बीपीएल कार्ड - कल्पना मनोरमा - 33
आख़िरी दीया - रविकांत राउत - 37
शहज़ादी की आवाज़- महेन्द्र तिवारी- 40
इश्क का रंग फ़रेबी - आशीष मोहन - 42
बलात्कार - सानियारा खान - 46
देह से परे - भारती मिश्रा - 47
जीर्णोद्धार - (गुजराती)
(लेखक व अनु. धर्मेश गांधी) - 53
दो संस्कृतियों का संगम - नील मणि - 56
देवदास अभी जिंदा है-शैलेन्द्र चौहान- 59
शिकायत - जसविंदर शर्मा - 63
स्मृतियों का आँगन- श्रद्धा जलज घाटे-64
भगवान करे - (मराठी)
(लेखक व अनु. किरण येले) - 66
केम छो? - प्रतिभा मिश्रा - 71
योद्धा - शर्मिला चौहान - 76
अमावस की रात
- डॉ. जितेन्द्र प्रसाद माथुर -80
*
लघुकथा :
वास्ता - आरती गोहिल 'श्री' - 31
उतरता रंग - संजय वर्मा 'दृष्टि' - 70
नुकसान - ज्योत्सना सिंह - 75
मैं जिंदा हूँ - डॉ. दलजीत कौर
*
बोध कथा :
शांतिप्रिय नेवला - जेम्स थर्बर - 81
*
झकास :
एक टिकट पर दो लोग यात्रा नहीं कर सकते
(व्यंग्य) - धर्मपाल महेन्द्र जैन - 72
*

'विश्व गाथा' में सभी साहित्यकारों का स्वागत है। आप अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें, साथ में अपना चित्र और परिचय भी। रचनाएँ भेजने से पहले, पूर्व अंकों का अवलोकन जरूर करें। प्रकाशित रचनाओं के विचारों का संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। विवादित या अन्य सामग्री चयन अधिकार संपादक का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक भुगतान नहीं होगा। **पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रचनाकारों के निजी विचार हैं, संपादक या संपादन मंडल-प्रकाशक का उनसे सहमत होना बिलकुल अनिवार्य नहीं है। यह अवैतनिक और अव्यावसायिक पत्रिका है।**
*
© Editor, Printer & Publisher : Pankajbhai Amrutlal Trivedi , Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Owner by : Pankajbhai Amrutlal Trivedi, Printed at Nidhiresh Printery, 23, Medicare Complex, Nr. A-One Garage, Surendranagar. Published at Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Jurisdiction : Surendranagar (Gujarat)

सदस्यों के लिए सूचना

'विश्व गाथा' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का यह 13वाँ वर्ष है। अहिंदी क्षेत्र गुजरात से निरंतर प्रकाशित होती है। **आपको भेजी जाती पत्रिका में आपके ही एड्रेस के ठीक ऊपर आपकी सदस्यता अवधि की समाप्ति के लिए भी सूचना होती है।** कृपया उसे जरुर देखें और समय पर अपनी सदस्यता की निरंतरता बढाएं। सदस्यता प्राप्त करने के लिए जरुरी बैंक और ऑनलाइन विवरण इसी पन्ने पर अन्य कॉलम में दिया गया है।

देश में डाक व्यवस्था बिलकुल चरमरा गई है यह अनुभव आपको भी होगा, इसलिए साधारण डाक नहीं सिर्फ रजिस्टर्ड पोस्ट से ही पत्रिका भेजनी पड़ती है। नहीं मिलने पर पोस्ट ऑफिस का संपर्क करें। त्रैमासिक पत्रिकाओं के लिए सरकार से कोई भी विज्ञापन नहीं मिलता। सोशल मीडिया के ज़माने में निजी उद्योग और अन्य व्यावसायिक विज्ञापन मिलना तो मानो असंभव हो गया है। इसलिए आज के दौर में प्रिंट पत्रिका का प्रकाशन न सिर्फ साहस का कार्य है बल्कि ज़िद्द भी है। ऑनलाइन निम्न वेबासाइट से पीडीऍफ़ ख़रीद सकते हैं -

https://notnul.com/Pages/Home.aspx

साहित्यकारों के लिए सूचना

'विश्व गाथा' पत्रिका त्रैमासिक होने के कारण इन महीनों में प्रकाशित होती है– **जनवरी-अप्रैल-जुलाई-अक्टूबर।** रचना भेजने के बाद कम से कम 3-महीने में उत्तर न मिले तो रचना को अस्वीकृत मान लेना उचित होगा। जिनकी भी रचना स्वीकृत होती है, उन्हें कॉल - मैसेज के द्वारा सूचना दी जाती है।

रचना के साथ रचनाकार का छायाचित्र, पूरा एड्रेस, पिनकोड एवं मोबाईल नंबर अवश्य भेजना होगा।

रचना चोरी की शिकायत मिलेगी तो रचना भेजने वाली व्यक्ति ही ज़िम्मेदार होगी और उनका नाम हमेशा के लिए 'विश्व गाथा' परिवार से हटाया जाएगा।

'विश्व गाथा' पत्रिका का मूल उद्देश्य विश्व साहित्य को बढ़ावा देना, भाषा और संस्कृति को जोड़ना है। साथ ही संगीत, चित्रकला, नाट्यकला एवं सामजिक सरोकार में अपना विचार प्रकट करना भी है। आदि सांस्कृतिक रचनाओं को भी स्थान दिया जाता है।

इस पत्रिका के माध्यम से सभी भाषा के और हर उम्र के पाठकों को जोड़ना है। यह अव्यवसायिक एवं पारिवारिक पत्रिका है, इसलिए सोशल मीडिया के ज़माने में बच्चों को पठन के साथ संस्कार भी मिले यह प्रयास है। जब आप लोगों का सहयोग मिलेगा तभी तो सफलता की गूँज देश-दुनिया में सुनाई देगी।

*

Vishwa Gatha

विश्व गाथा

(हिन्दी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका)

Membership for Magazine

*

1-Year Rs. 600/-

5-Years Rs. 3000/-

Life Time Rs. 15,000/-

(Including Postal Charges)

*

Bank Detail

Bank Name : State Bank of India

Account Name : **VISHWAGATHA**

Account Number : **38 77 15 23 839**

Branch Code : 16063

IFSC Code : **SBIN0016063**

*

Payment Google Pay & Paytm : &
Contact Number Mobile - 09662514007

*

Address

Vishwa Gatha C/o. Pankaj Trivedi
Gokulpark Society, 80 Feet Road,
Surendranagar-363002 Gujarat

*

vishwagatha@gmail.com

हर दिन एक नई कथा जन्म लेती है !

पंकज त्रिवेदी

इस कथा-कहानी विशेषांक में कोशिश रही है कि कहानीकार, कथा और प्रदेश की विविधता के साथ मनोरंजक, रोचक एवं साहित्यिक स्तरीय कहानियों का सम्पूट बनाया जाएं। इस अंक के साथ 'विश्व गाथा' पत्रिका के 13-वर्ष संपन्न हो रहे हैं। आप सभी को दशहरा एवं दीपावली पर्व की हार्दिक बधाई।

*

मानव जीवन, संस्कृति और कल्पना का एक प्राचीन फिर भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह पूछना बहुत आसान लग सकता है: कहानी क्या है? इसका जवाब शायद साफ़-साफ़ पता हो। कहानी किसी ऐसी घटना का ब्यौरा होती है जिसमें शुरुआत, बीच का हिस्सा और अंत होता है। लेकिन एक लेखक के तौर पर, आप पहले से ही जानते हैं कि कहानी सिर्फ़ बनावट से कहीं ज़्यादा है। बेहतरीन कहानी कहने की कला हमें दुनिया को समझने, दूसरों से जुड़ने और पन्नों पर अर्थ गढ़ने में मदद करती है। आप चाहे किसी भी तरह की कहानी (फिक्शन) लिख रहे हों -बच्चों के लिए या बड़ों के लिए- यह समझना ज़रूरी है कि किसी चीज़ को 'कहानी' क्या बनाता है, ताकि आप अपनी रचना में जान डाल सकें।

कहानी के मुख्य तत्वों के बारे में बताएंगे और समझाएंगे कि हम जो कहानियाँ सुनाते हैं, वे सिर्फ़ मनोरंजन या फुर्सत का ज़रिया होने से कहीं ज़्यादा क्यों हैं। अच्छी कहानी कहने की कला के क्लासिक तत्वों को फिर से समझकर, आप अपने लिखे शब्दों को एक ऐसी ज़बरदस्त कहानी में बदल सकते हैं जो आखिरी पन्ना पढ़ने के बाद भी पाठक के मन में बसी रहती है।

यान मार्टेल लिखते हैं, "एक बेहतरीन कहानीकार की आवाज़ वह होती है जो कैम्पफ़ायर के आस-पास गूंजती है और हमें बताती है कि अंधेरे से डरने की ज़रूरत नहीं है। यह आवाज़ दूर की, पुरानी लेकिन हमेशा प्रासंगिक हो सकती है, जो किसी दूसरे दौर की कहानियाँ सुनाती हो, या फिर आधुनिक रीति-रिवाजों पर तीखी टिप्पणी करती हो। असल बात उस आवाज़ की है, जो किताब के पन्नों में अंकित है। यह एहसास दिलाती है कि हम अकेले नहीं हैं और दूसरे लोगों ने भी वैसा ही महसूस किया है या कर रहे हैं।"

मुंह-ज़बानी कहानी सुनाने की शुरुआत से ही, सभी कहानियों में एक बात कॉमन रही है। चाहे वह किसी ऐसे आदमी की कहानी हो जिसकी जंग से घर वापसी ने उसे और उसके चाहने वालों को बदल दिया, या फिर पृथ्वी के चक्कर काटते किसी स्पेस स्टेशन की कहानी हो जो यह दिखाती है कि इंसान ने अपने ही ग्रह को कैसे बदल दिया है-

कहानियां हमेशा बदलाव के बारे में ही रही हैं।

हमें कहानियों की चाहत इसलिए होती है क्योंकि वे ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव भरे सफ़र में हमारा रास्ता दिखाती हैं। एक अच्छी कहानी डरे हुए लोगों को हिम्मत दे सकती है, निडर लोगों को प्रेरित कर सकती है, या फिर जानने की इच्छा रखने वालों को उन बदलावों के बारे में बता सकती है जो हो चुके हैं या होने वाले हैं। हमारी ज़िंदगी बदलाव के अलावा और कुछ नहीं है। कहानी सुनाना हमें उन असल हालात से कुछ पल के लिए दूर ले जाने, उन्हें समझने और आखिरकार उन्हें स्वीकार करने में मदद करता है जिनमें हम घिरे होते हैं।

एक अच्छी कहानी हमेशा पाठकों को हौसला देती है। जीवन के अच्छे -बुरे अनुभवों में मार्गदर्शक बनती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का गहन अभ्यास किया जाएं तो वो एक कहानी का कच्चा मटिरियल तो होता है मगर जब को संवेदनशील और दृष्टिवान लेखक जब उस जीवन को देखता या समझता है तब उनमें से कहानी का पिंड ढूँढ लेता है। उसमें अपने प्रदेश की भाषा, संवाद और परिवेश का पाठक को परिचय करवाते हुए नए सफ़र में ले जाता है। घटनाएं तो सभी के जीवन में होती है, फिर भी उसमें परिवार और समाज के नीति-नियम, धर्म, राजनीति, परंपरा और उस कालखंड की भावाभिव्यक्ति भी होती है। एक तरह से देखें तो कहानी अपने अपने कालखंड का इतिहास बनाती है।

कहानी को पढ़ते हुए पाठक समझ लेता है कि यह कौन से प्रदेश की कथा है। इंसान और इंसानियत तो दुनिया के किसी भी इंसान के साथ जुडी होती है। उसमें से ही हर दिन एक नई कथा जन्म लेती है। जो हमें एक अलग दुनिया का अनुभव कराते हुए अपनापन का भी एहसास करवाती है। कुछ कहानियाँ हमारे ज़हन में हमेशा के लिए रह जाती है, क्यूँकि कहीं न कहीं हमें उस कहानी के पात्रों से लगाव हो जाता है या लगता है कि मेरे जीवन में भी ऐसा कुछ हुआ है।

जाने-अनजाने में हम उन पात्रों के साथ अपना रिश्ता जोड़ लेते हैं। उनके सुख-दुःख जैसे हमारे हों, इस तरह से महसूस करने लगते हैं। कहीं कहानीकार की सोच से अलग हमारी सोच भी होती है। इसलिए हम अपने ढंग से कहानी के बारे में सोचते हैं या हमारी सोच से भी आगे लेखक की सोच को मन ही मन सलाम करते हैं। लेखक कहानी तो लिख देता है, उसके बाद पाठक अपने अंदाज़ में उसका मूल्यांकन करता है। कहानी की चर्चा होती है, यही तो लेखक की सफ़लता है।

*

भीतर धधकता हुआ ज्वालामुखी

लेखक व अनुवादक: डॉ. माधवी एस् भंडारी

पाँच साल बाद बेटे के घर आई थी। बालकनी में आकर चारों ओर देखा तो बहुत कम पहले जैसे थे। अधिक से अधिक परिवर्तन के भंवर में फंसकर संत्रस्त-से लग रहे थे। खेड़े जैसा हमारा गाँव ही परसों की तरह आज नहीं है। ऐसे में बेंगलोर जैसे बड़े शहर का जैसे का तैसा रहना कैसे संभव है? निचले तल्ले में रहनेवाले परिवार का एक छोटा बच्चा बाहर आकर खेल रहा था। फ्लैट के ऊपरी हिस्से में मरम्मत का काम चल रहा था। एक जगह से ईंट ले जाकर रखने वालों में से एक कर्मचारी ऊपर से चिल्ला रहा था, "तुम लोगों को कितनी बार समझाना पड़ेगा कि बच्चे को अंदर ले जाकर दरवाजा बंद कर लो। कुछ अनहोनी हो जाय तो हमारी जान को भी जोखिम में डाल देते हो।"

हमारे फ्लैट के पीछे एक छोटी सी सड़क है। उसकी बगल में स्थित इमारत वैसे ही थी। बाहर से तो किसी भी प्रकार का परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा था। उसी समय दरवाजा खोलकर राजन बाहर आया और अपनी गाड़ी स्टार्ट करके गेट के बाहर ऐसा गायब हो गया मानो किसी जादूगर ने छड़ी घुमाकर दृश्य परिवर्तन कर दिया हो। घर का नौकर बाहर आकर गेट बंद करके भीतर चला गया। मेरी आंखें उस मकान में किसी की तलाश में थी। उन्हें न पाकर निराशा ही हाथ लगी।

मेरी बहू बालकनी में आकर कहने लगी, "मम्मी जी, आज बावर्चिन के हाथों 'बिसी बेले भात' (दाल, चावल और सब्जियों के साथ मसाला डालकर पकानेवाला पुलाव जैसे ही एक व्यंजन) बनवा रही हूँ। आपके लिए तो यह विशेष है न?" 'ठीक है' कहने के लिए मैं मुँह खोलने ही वाली थी, उसके पहले ही वह भीतर की ओर मुड़ चुकी थी। वैसे भी मुझे उससे कुछ और भी पूछना था। उसका पीछा करते हुए मैं स्वयं रसोई घर तक आई। उसकी बावर्चिन दाल भिगोकर, सब्जियाँ काटने की तैयारी में थी। साथ ही चावल भी निकाल के रख चुकी थी। उसी से पूछा, "सड़क की उस पार जो बड़ी इमारत है न, वहाँ जो अम्माजी रहती थीं न, राजन साहब की माँ, क्या वे वहाँ नहीं है?"

"वह जो सफेद साड़ीवाली टिप टॉप लेडी? अंदर होंगी। बहु नहीं है!" कहते समय उसने बहू शब्द पर थोड़ा जोर देकर प्रश्नार्थक दृष्टि से मेरी ओर देखा। देखने का अंदाज कुछ ऐसा था कि जिस विषय को पूरी दुनिया जानती है, क्या आपको अभी तक नहीं पता? .. मुझे भी थोड़ी बहुत जानकारी थी। उसी को विस्तार से जानने की जिज्ञासा मन में थी। ऐसा उससे कहने का मन तो हुआ, पर उससे क्यों कहूँ? वह भी ऐसी औरत से, जो भागंभाग आनेवाली, जो मानो द्वार पर ही घोड़े को ऐसे छोड़कर आनेवाली, जिसे ठीक तरह से बांधने के लिए भी उसके पास समय न हो, ऐसे में मैं उसके अमूल्य समय को कत्ल करने की धृष्टता क्यों करूँ? ऐसा सोचकर चुप हो गई।

उसने ये समाचार तो दिये कि पद्मावती अम्मा घर पर ही हैं, यही पर्याप्त है। दोपहर के भोजन के बाद थोड़ा सुस्ताती होंगी। दो घंटे बाद चाय पीकर वहाँ चली जाऊंगी तो ठीक रहेगा। उनके बेटे के लौटने तक थोड़ी बहुत इधर-उधर की बातें करूँगी। हाल-चाल का विनिमय भी हो जाएगा।

अचरज की बात यह थी कि भोजन समाप्त करके जैसे ही मैं बालकनी गयी तो देखा, पद्मावती अम्मा गर्दन ऊपर करके मेरी ओर देख हाथ हिला रही हैं। ऐसा लगा मानो जिस जड़ी बूटी की मुझे तलाश थी, वही वल्लरी मेरे पैरों में आकर उलझ गई हो! मेरी खुशी की सीमा ही नहीं रही। मैं ने भी अपना हाथ जोर से हिलाया।

"बेटा, मैं अभी आई" कहकर नीचे गयी और सड़क पार किया। गेट खोलकर अंदर गई। पद्मावती अम्मा द्वार पर ही खड़ी थी। मुझे खींचकर अपनी बाहों में कस लिया। देखनेवालों के लिए तो राम-भरत मिलाप को ही दृश्यबद्ध कर देनेवाला था! मेरे लिए तो अपनेपन से भरा रोमांचक क्षण था। उन्होंने बताया कि उन्हें भी मेरी तरह दोपहर को सोने की आदत नहीं है। मैंने पूछा, "कहीं मैं आपके स्मृति-पटल से ओझल तो नहीं हुई थी?"

उनसे हाजिर जवाब मिला, "आपके नाम को भूल पाना मेरे लिए कतई संभव नहीं है। मलयालम की माधवी कुट्टी मेरी अत्यंत प्रिय लेखिका है। अब दुख इस बात का है कि मेरे बेटे का जीवन भी उनकी कथावस्तु की तरह बन गई!" मेरे लिए तो यह बहुत ही आसान हो गया कि मैं जिस विषय की तह तक पहुँचना चाहती थी, उसके लिए उन्होंने ही